हिंदुस्तान कानपुर 17/12/2021

सीएसए में पीएम के कार्यक्रम का प्रसारण

कानपुर। सीएसए के प्रसार निदेशालय में प्रधानमंत्री के कार्यक्रम का सजीव प्रसारण देखने के लिए विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्रधानमंत्री ने गौ आधारित प्राकृतिक खेती के बारे में जानकारी दी और लोगों को प्रोत्साहित किया। विवि के कुलपति डॉ. डीआर सिंह समेत अन्य वैज्ञानिकों ने किसानों को प्रकृतिक खेती के लाभ के बारे में जानकारी दी। निदेशक प्रसार डॉ. एके सिंह ने कहा कि मृदाओं में पोषक तत्व जैव कार्बन की कमी है जो प्राकृतिक खेती को अपनाने से कम हो जाती है। प्राकृतिक खेती मृदा स्वास्थ्य के लिए लाभकारी है। इसको पुनर्योजना कृषि का एक रूप माना जाता है।

दैनिक जागरण कानपुर 17/12/2021

सलाह चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विवि के कुलपति डा.डीआर सिंह ने दी जानकारी

भूमि सुधार को जीरो बजट प्राकृतिक खेती जरूरी

जासं, कानपुर: भूमि में रासायनिक उर्वरकों के लगातार प्रयोग के कारण इसकी गुणवत्ता में कमी आ रही है, साथ ही भूमि प्रदूषित हो रही है। जीरो बजट प्राकृतिक खेती से भूमि के स्वास्थ्य को दोबारा ठीक करने में मदद मिलेगी। इस खेती में उर्वरक के स्थान पर गाय के गोबर की खाद का इस्तेमाल करते हैं। इससे किसान की लागत घटती है और भूमि के साथ फसल की गुणवत्ता बनी रहती है। विवि के प्रयास से सात जिलों में 35 किसान इस जीरो बजट खेती को अपना चुके हैं और बाकी को भी प्रोत्साहित करने के लिए प्रयास किया जा रहा है...। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विवि (सीएसए) के कुलपति डा. डीआर सिंह ने दैनिक जागरण के साक्षात्कार में यह जानकारी दी है।

साक्षात्कार

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विवि के कुलपति डा.डीआर सिंह • जागरण

- जीरो बजट खेती की अवधारणा क्या है?

-जीरो बजट खेती का मतलब पूरी तरह प्राकृतिक संसाधनों के जरिए खेती करना है। खेती करने में अतिरिक्त लागत नहीं लगती। गाय के गोबर की खाद, जीवाणु खाद, फसल अवशेष व प्रकृति में मौजूद खनिज का इस्तेमाल होता है।

- इस खेती में फसल उत्पादन पर क्या असर पड़ता है?

-विवि प्रशासन जीरो बजट खेती को लेकर शोध चल रहा है। विवि में करीब 8000 वर्गमीटर क्षेत्रफल पर खेती की गई है। पहले उर्वरक के इस्तेमाल से प्रति हेक्टेयर गेहूं का उत्पादन 43.35 क्विंटल था। प्राकृतिक खेती से यह उत्पादन 40.45 क्विंटल हुआ है। उत्पादन और बढ़ाने की कोशिश हो रही है।

- इस खेती के प्रति किसानों का रुझान कैसे बढ़ेगा?

-जीरो बजट खेती के कई फायदे हैं। वर्ष भर में अलग-अलग किस्म की कई फसलें बोई जा सकती हैं और इसमें लागत नहीं आती। जब भूमि की उर्वरा शक्ति ज्यादा होगी तो फसल में पौष्टिकता, स्वाद आदि भी बेहतर होगा।

- किसान अपनी आय बढ़ाने के लिए क्या करें?

-किसानों को फसलचक्र के अनुसार खेती करनी चाहिए। बीजों की पैदावार भी बढ़ाएं, ताकि बीज खरीदने के लिए उन्हें बाजार न जाना पड़े। एक ही फसल पर ही निर्भर न रहें, बल्कि एक साथ कई फसलें बोएं। जैसे गेहूं के साथ सरसों उगाएं। मेड़ पर पपीते, पापुलर व अन्य इमारती लकड़ी के पेड़ भी लगा सकते हैं।

- भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ाने के लिए कौन सी तकनीकी अपनाएं?

-किसान फसलों की बुवाई से ही भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ा सकते हैं। जैसे अगर किसान इस वर्ष गेहूं का उत्पादन कर रहे हैं तो अगले वर्ष दलहन का उत्पादन कर सकते हैं। दलहनी फसलों की जड़ों में राइजोबियम जीवाणु होता है जो नाइट्रोजन को अवशोषित करता है। साथ ही भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ाता है। फसल बोने से पहले हरित खाद जैसे सनई, ढैंचा आदि तैयार कर उसे भूमि में डालें।

- प्राकृतिक खेती बढ़ाने के लिए विवि प्रशासन की क्या तैयारी है।

-कोशिश है कि सभी किसान अपने खेत के कम से कम 10 फीसद रकबे में प्राकृतिक खेती करें और उस फसल की गुणवत्ता व उत्पादन का आंकलन करें। मिट्टी में पोषक तत्व बढ़ेंगे तो उर्वरा शक्ति बढ़ेगी और उत्पादन भी बढ़ जाएगा। हमने यह भी सुझाव दिया है कि गंगा के किनारे स्थित सभी गांवों में प्राकृतिक खेती ही कराई जाए।

- फसलों में सिंचाई अभी भी काफी महंगी है, उसे कैसे कम करें।

-कई फसलों की आज ऐसी प्रजातियां भी विकसित कर ली गई हैं, जो कम पानी में पैदा हो सकती हैं। गेहूं में पहले पांच से छह बार पानी देना पड़ता था। अब एक पानी और बिना पानी वाली प्रजाति भी मौजूद है। इसी तरह अन्य फसलों में कम पानी वाली प्रजातियां हैं।

- सरकार की ओर से क्या योजनाएं हैं?

-सरकार कई योजनाएं चला रही है, जिससे किसानों को फायदा है। प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना के तहत ड्रिप व स्प्रिंकलर वाली प्रणाली से मदद मिलती है। फार्मर्स प्रोड्यूसर आर्गनाइजेशन से जुड़कर किसान समूह के रूप में मंडियों में उत्पाद बेच सकते हैं। सिंचाई के लिए सोलर पंप का इस्तेमाल भी कर सकते हैं।

राष्ट्रीय सहारा

कानपुर • शुक्रवार • 17 दिसम्बर • 2021

वैज्ञानिकोंकिसानों ने सुना प्राकृतिक खेती पर पीएम मोदी का आभासी भाषण

कानपुर (एसएनबी)। सीएसए कृषि एवं प्रौद्योगिकी विवि के प्रसार निदेशालय में आयोजित कार्यक्रम में विवि के वैज्ञानिकों, शिक्षकों व किसानों ने 'गौ आधारित प्राकृतिक खेती' पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का आभासी भाषण देखा-सुना। पीएम ने अपने संबोधन में कहा कि देश के किसान भाई प्राकृतिक खेती के द्वारा कृषि लागत को कम करने के साथ ही गुणवत्तायुक्त भरपूर उत्पादन कर अपनी आय में वृद्धि कर सकते हैं। इससे मृदा स्वास्थ्य में भी सुधार होता है व जमीन उपजाऊ होती है।

विवि के निदेशक प्रसार डॉ.अरविंद कुमार सिंह ने इस मौके पर आये किसानों को संबोधित करते हुए कहा कि वर्तमान में हमारे देश की अधिकांश मृदाओं में पोषक तत्व व जैव कार्बन की कमी है। प्राकृतिक खेती को अपनाकर भूमि में कम हो रही पोषकतत्वों की मात्रा एवं जीवांश कार्बन का बढ़ाया जा सकता है।

सीएसए कृषि विवि में दिखाया गया पीएम मोदी का आभासी भाषण।

प्राकृतिक खेती केवल मृदा स्वास्थ्य के लिए लाभकारी ही नहीं है, बल्कि यह संपूर्ण कृषि प्रणाली के लिए भी लाभदायक है। यहां पीएम के भाषण के सजीव प्रसारण को 178 लोगों ने सुना, जिसमें ज्यादातर किसान थे। विवि के अधीन संचालित सभी 13 कृषि विज्ञान केन्द्रों पर प्रधानमंत्री के कार्यक्रम का सीधा प्रसारण किया गया। सभी केन्द्रों को मिलाकर 1971 लोगों ने कार्यक्रम में भाग लिया। अनौगी कृषि विज्ञान केन्द्र पर वरिष्ठ वैज्ञानिक व अध्यक्ष डॉ.विजय कुमार कन्नौजिया, सस्य वैज्ञानिक डॉ.विनोद कुमार व गृह वैज्ञानिक डॉ.पूनम सिंह व वैज्ञानिक अमरेन्द्र यादव ने रासायनिक खादों के दुष्परिणामों से किसानों को अवगत कराया। उन्होंने कहा कि डीएपी का प्रयोग खड़ी फसल में करना फायदे का सौदा नहीं है। हमें खेत में जीवाणुओं की संख्या बढ़ा भूमि में पड़े स्थिर तत्वों को घुलनशील बनाने की जरूरत है। प्रगतिशील किसान अमरनाथ ने भी अपना अनुभव साझा किया। श्री मोदी ने आनंद (गुजरात) में 'प्रीवाइब्रेंट गुजरात समिट-2021' के समापन मौके पर किसानों को गौमूत्र व गोबर में घनजीवामृत, वर्मी कंपोस्ट आदि डालकर खेती को जहरमुक्त करने का संकल्प भी दिलाया। उन्होंने खेती में लगातार दवाईयों के नाम पर डाले जा रहे जहर को रोकने पर जोर दिया।

News Expert
13h ·

प्राकृतिक खेती से कृषि में होगा कायाकल्प

कानपुर नगर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के प्रसार निदेशालय में देश के माननीय ओजस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी का गौ आधारित प्राकृतिक खेती पर आभासी भाषण विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों/ शिक्षकों/अधिकारियों तथा किसानों द्वारा देखा एवं सुना गया। इस अवसर पर माननीय प्रधानमंत्री जी ने आवाहन किया कि देश के सभी किसान भाई प्राकृतिक खेती के द्वारा कृषि की लागत को कम करने के साथ ही भरपूर एवं गुणवत्ता युक्त उत्पादन कर अपनी आमदनी में वृद्धि कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि प्राकृतिक खेती के द्वारा जहां एक ओर आमदनी में वृद्धि होती है वहीं दूसरी ओर मृदा स्वास्थ्य में सुधार होता है।इस अवसर पर गुजरात के राज्यपाल श्री आचार्य देवव्रत जी, केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर, केंद्रीय सहकारिता एवं गृह मंत्री अमित शाह, गुजरात के मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल जी ने भी विचार व्यक्त किए। विश्वविद्यालय के निदेशक प्रसार समन्वयक डॉ अरविंद कुमार सिंह ने किसानों को संबोधित करते हुए बताया कि वर्तमान में हमारे देश की अधिकांश मृदाओं में पोषक तत्व तथा जैव कार्बन की कमी है। प्राकृतिक खेती को अपनाने से भूमि में कम हो रही पोषक तत्वों की मात्रा एवं जीवांश कार्बन को बढ़ाया जा सकता है। प्राकृतिक खेती मृदा स्वास्थ्य के लिए लाभकारी ही नहीं है । अपितु यह संपूर्ण कृषि प्रणाली के लिए भी लाभदायक है। इस अवसर पर माननीय प्रधानमंत्री जी ने प्राकृतिक खेती की सार्थकता को सिद्ध करते हुए यह उद्गार व्यक्त किए कि यह रसायन मुक्त कृषि और पशुधन आधारित है। कृषि परिस्थिति के मानकों पर आधारित यह एक विविध कृषि प्रणाली है जो फसलों, वृक्षों और पशुधन को एकीकृत करती है। जिससे जैव विविधता के इष्टतम उपयोग को बढ़ावा देता है। प्राकृतिक खेती को पुनरयोजना कृषि का एक रूप भी माना जाता है। इसमें भूमि प्रथाओं का प्रबंधन एवं मिट्टी तथा पौधों में वातावरण से कार्बन को अवशोषित करने की क्षमता होती है। वास्तव में यह किसानों के लिए बहुत उपयोगी है। लागत प्रभावी कृषि पद्धति को प्राकृतिक खेती द्वारा स्थापित किया जा सकता है। यह बहुआयामी है इसमें रोजगार सृजन, पर्यावरण संरक्षण,जल की कम खपत, मृदा स्वास्थ्य सुधार, पशुधन स्थिरता सुनिश्चित होती है। प्रसार निदेशालय के समन्वयक डॉ अरविंद कुमार ने बताया कि माननीय प्रधानमंत्री के सजीव प्रसारण को विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों/ अधिकारियों/ शिक्षकों एवं किसानों सहित 178 लोगों ने प्रतिभाग किया। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय के अधीन संचालित सभी कृषि विज्ञान केंद्रों में भी इस सजीव प्रसारण को किसानों एवं महिला किसानों को भी दिखाया एवं सुनाया गया है।जिसमें लगभग 1971 प्रतिभागियों ने प्रतिभाग किया है।